ये अव्यक्त इशारे

कर्मयोगी बनो

9-06-2024

आप सबको बाप द्वारा शुद्ध प्रवृत्ति मिली हुई है, बुद्धि की प्रवृत्ति है शुद्ध संकल्प करना, वाणी की प्रवृत्ति है जो बाप द्वारा सुना वह सुनाना, कर्म की प्रवृत्ति है कर्मयोगी बन हर कर्म करना, कमल समान न्यारा और प्यारा बन रहना, हर कर्म द्वारा बाप के श्रेष्ठ कार्यों को प्रत्यक्ष करना, हर कर्म चरित्र रूप से करना। चतुराई नहीं लेकिन चरित्र, वह भी दिव्य चरित्र हो तब कहेंगे कर्मयोगी।

Be a karma yogi.

All of you have received a pure household (activity) from the Father. The activity of the intellect is to have pure thoughts, the action of your words is to relate what you have heard from the Father. The activity of karma is to perform every action as a karma yogi, to be detached and loving like a lotus and to reveal the Father's elevated task through your every action, to perform every action as a divine activity. Do not be very clever, but have a character, that is a divine character, and only then will you be called a karma yogi.